B.Ed. 1st Year
Session – 2019-2020/2021
Subject – Contemporary India & Education
Course – C-2/**Unit** – 2(a)
Topic – **माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य**
(Aims of Secondary Education)

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

Lecture No. - 86

Continued from the previous lecture....

3. **नेतृत्व के गुणों का विकास** - लोकतांत्रिक समाज की सफलता योग्य नेताओं पर निर्भर करती है। लोकतांत्रिक सरकार विकेन्द्रीकरण के सिद्धांत पर कार्य करती है। इस कारण विभिन्न स्तरों पर योग्य नेताओं की आवश्यकता पड़ती है। अच्छे नेतृत्व के लिए यह आवश्यक है कि वह राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से मजबूत हो। तभी वह प्रगति कर सकता है। उपरोक्त सभी गुण शिक्षा के बिना प्राप्त नहीं किए जा सकते। विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों और पाठ्य-सहायक क्रियाओं के द्वारा ऐसे गुण विकसित किए जा सकते हैं।

4. **व्यावसायिक कुशलता का विकास** - माध्यमिक शिक्षा आयोग ने इस उद्देश्य की ओर संकेत करते हुए कहा है कि इस स्तर पर विद्यार्थियों के अंदर कुछ व्यावसायिक कुशलताओं का विकास करना चाहिए। आयोग का मानना था कि कोई भी राष्ट्र आर्थिक विकास किए बिना विकसित राष्ट्र नहीं बन सकता। इसलिए राज्य का यह उत्तरदायित्व होता है कि वह ऐसी राजव्यवस्था एवं साधनों का प्रबंध करे जिनके द्वारा छात्रों को व्यावसायिक कार्यों के बारे में शिक्षा दी जा सके। इससे वे अपने भविष्य का निर्वाह सही ढंग से कर सकेंगे एवं राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देने में सक्षम होंगे।

निष्कर्ष - इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा आयोग ने माध्यमिक शिक्षा को विस्तृत उद्देश्य निर्धारित किए। भारत में लोकतंत्र की स्थापना के पश्चात यह आवश्यक हो गया था कि लोगों के अंदर इसके बारे में व्यापक सोच बने। आपसी मेल-मिलाप और भ्रातृत्व का विकास हो जिससे प्रजातंत्र की जड़ें मजबूत बनें। आयोग ने व्यक्तित्व के विकास को मुख्य उद्देश्य बनाकर व्यापक योजना तैयार की। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है किदेश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित किए गए।

समाप्त